

शिक्षक प्रदर्शन मानक और सूचक

शिक्षक प्रदर्शन मानक और सूचक मुख्यतः चार श्रेणियों- सामान्य शिक्षण विधि, भाषा शिक्षण, गणित शिक्षण और परिवेशीय अध्ययन शिक्षण पर आधारित हैं। हर सूचक में चार स्तर हैं- A, B, C और D। D न्यूनतम स्तर है, जबकि C उससे थोड़ा बेहतर। हर सूचक में B वांछित स्तर है और A आदर्श स्तर। हमारा लक्ष्य है हर सूचक में कम से कम B तक पहुंचना।

सामान्य शिक्षणविधि

बच्चे सीखें इस लिये आवश्यक है कि कक्षा में बच्चों की सहभागिता झलके, उन्हें सीखने के लिये मौके मिलें, और नयोजित तरीके से सीखना सुनिश्चित हो। इसके लिये शिक्षक अपनी कक्षाओं में बच्चों के लिये भयमुक्त और खुला माहौल रच कर गतिविधि आधारित शिक्षण की ओर बढ़ सकते हैं। शिक्षणविधि के तीन प्रमुख पहलुओं पर सूचक बनाये गये हैं:

- सहज सम्बंध एवं आकर्षक माहौल
- गतिविधि आधारित शिक्षण की ओर प्रारंभिक कदम
- सीखना सुनिश्चित करने की पहल

इनके अन्तर्गत प्रगति आंकने के लिये जिन सूचकों का प्रयोग कर सकते हैं वे आगे दिये गये हैं।

सहज सम्बंध एवं आकर्षक माहौल			
G1. कक्षा में ऐसा माहौल है कि बच्चे बिना डरे अपनी बात कहते हैं, हो रही प्रक्रियाओं में भाग लेते हैं, और कोई भी छूटता हुआ नहीं दिखता।			
A	B	C	D
शिक्षक सुनिश्चित करते हैं कि हर बच्चे को दिन में मौके मिलें, और जो भाग नहीं ले पा रहे हैं, उनको शामिल करने के लिये विशेष प्रयास करते हैं।	शिक्षक बच्चों को बोलने और भाग लेने के मौके देते हैं, लेकिन कुछ बच्चे (१-४) बिल्कुल भाग नहीं ले रहे हैं।	कुछ बच्चे बोल रहे हैं, लेकिन कुछ समूह छूटे ही पड़े हैं।	ज़्यादातर बच्चे डरे सहमे दिखते हैं, बोल नहीं रहे हैं।
गतिविधि आधारित शिक्षण की ओर प्रारंभिक कदम			
G2. बच्चों के सामने रोचक और चुनौतीपूर्ण संदर्भ/प्रसंग/अनुभव रच कर सीखने की प्रक्रिया शुरू करते हैं।			
A	B	C	D
सीखने की प्रक्रिया में पूरे समय बच्चों को जोड़े रख पाते हैं - रुचिकर क्रियाओं में माध्यम से।	बच्चों को जोड़ने के लिये रुचिकर व चुनौतीपूर्ण अनुभव पैदा कर शुरू करते हैं।	कभी-कभार एक-दो उदाहरण दे कर समझाने की कोशिश करते हैं।	बच्चों में रुचि पैदा करने का प्रयास नहीं करते हैं।
G3. बच्चों को दिन के कुछ समय छोटे समूहों में मिल कर काम करने के मौके मिलते हैं।			
A	B	C	D

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

बच्चे छोटे समूहों में मिल कर निर्णय व जिम्मेदारी लेते हुए कार्य करते हैं।	बच्चों को छोटे समूहों में मिलकर कान करने के मौके मिलते हैं।	बच्चे समूहों में बैठते तो हैं लेकिन मिल कर सोचते या कार्य करते नहीं दिखते।	बच्चों के समूह कार्य के मौके नहीं मिलते।
G4 शिक्षक ठोस सामग्री, AV सामग्री एवं पुस्कालय की पुस्तकें बच्चों के हाथ में देकर प्रयोग करते हैं।			
A	B	C	D
शिक्षक स्वयं या बच्चों के साथ मिल कर सामग्री बनाते/जुटाते हैं और बच्चों को अपने आप प्रयोग करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं।	शिक्षक बच्चों को अपने हाथों से सामग्री के साथ अलग-अलग रोचक कार्य का मौका देते हैं, खुद भी पढ़कर सुनाते/चर्चा करते हैं।	शिक्षक सामग्री का प्रयोग प्रदर्शन के लिये अधिक करते हैं।	शिक्षक पाठ्यपुस्तक के अलावा और सामग्री का प्रयोग नहीं करते।
सीखना सुनिश्चित करने की पहल			
G5. शिक्षक द्वारा शिक्षण योजना बनायी जाती है और सामान्यतया उसके अनुसार शिक्षण किया जाता है।			
A	B	C	D
योजना बनाते हैं, पालन करते हैं, उसमें बच्चों की विविध जरूरतों के लिये विकल्प भी रखते हैं।	योजना बनाकर और उसके अनुसार पढ़ाने का स्पष्ट प्रयास करते हैं।	योजना बनाते हैं लेकिन उसका उपयोग कम ही करते हैं।	शिक्षक योजना नहीं बनाते हैं।
G6. शिक्षक ने बच्चों की प्रोफाइल भरी है, और उनका उपयोग शिक्षण योजना के लिये किया है। उसके आधार पर विशेष शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों के सीखने के लिए वे विशेष अवसर बनाते हैं।			
A	B	C	D
प्रोफाइल के आधार पर योजना बना कर प्रयोग कर रहे हैं, और विशेष शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों के सीखने के लिए अवसर बना रहे हैं।	प्रोफाइल भरी है, और उसके आधार पर शिक्षण योजना बना कर प्रयोग कर रहे हैं।	प्रोफाइल कुछ हद तक बनाई है लेकिन प्रयोग में नहीं है।	बच्चों की प्रोफाइल नहीं बनाई है।
G7. शिक्षक सभी बच्चों का नियमित रूप से आकलन कर रेकार्ड रखते हैं।			
A	B	C	D
नियमित आकलन के रिकार्ड का विश्लेषण कर शिक्षण नियोजन बेहतर कर पा रहे हैं।	नियमित आकलन कर रिकार्ड रखा जा रहा है।	आकलन नियमित होता है पर रिकार्ड पूरी तरह नहीं होता।	आकलन नियमित नहीं होता है।

भाषा शिक्षण

भाषा शिक्षण में मौखिक भाषा में अभिव्यक्ति, विभिन्न मानसिक व भाषाई क्रियाओं के सहारे पठन क्षमता की ओर बढ़ने पर जोर है (मौखिक भाषा का विकास नहीं होने का प्रभाव पठन क्षमता के विकास पर पड़ता है)।

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

बच्चों को विविध संदर्भों में भाषा के उद्देश्यपूर्ण प्रयोग के मौके मिलने चाहिये। बच्चों की सहभागिता ही उनके भाषा सीखने का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।

L1. शिक्षक बच्चों को (वस्तुओं, चित्रों, प्रक्रियाओं, अनुभवों, विचारों और भावनाओं पर) अभिव्यक्ति के मौके देते हैं, वार्तालाप करते हैं, ज़रूरत पड़े तो उनकी कही बातों को ब्लैकबोर्ड पर लिख कर उसे पढ़ना सिखाने के लिये प्रयोग करते हैं।

A	B	C	D
शिक्षक बच्चों द्वारा कही बातों को ब्लैकबोर्ड पर लिख कर उसे पढ़ना सिखाने के लिये प्रयोग करते हैं। वे बच्चों के लिये आपस में चर्चा कर के निष्कर्ष तक पहुंचने के मौके पैदा करता है। (अगर वाले प्रश्नों का भी प्रयोग होता है)	शिक्षक खुले प्रश्न करते हैं, बच्चों के लिये सोच के बोलने के मौके पैदा करते हैं, उनकी कही बातों पर प्रतिक्रिया जाहिर कर उन्हें बोलने के प्रेरित करते हैं ताकि वार्तालाप हो सके। (सूची प्रश्न, कैसे, क्यों - इन प्रश्नों का उपयोग होता है)	शिक्षक बच्चों से प्रश्न पूछते हैं, लेकिन अधिकतर ऐसे जानकारी प्रधान प्रश्न है जिनका एक ही उत्तर होता है। (क्या, किधर, कब, कौन, कहां - ये प्रश्न अधिक होते हैं)	बच्चों को कभी-कभार ही बोलने का मौका मिलता है।

L2. शिक्षक बच्चों को पठित सामग्री/पाठ से संपर्क कराने के पहले उसका संदर्भ रचते हैं और सुरागों के सहारे पहले स्वयं से उसे भेदने के मौके देते हैं।

A	B	C	D
वे पाठ्य सामग्री को पढ़ाने के पहले बच्चों को खुद ही उस सामग्री के बारे में अपने अनुमान व प्रश्न बनाने का मौका देते हैं, उन पर चर्चा करते हैं, ज़रूरत पड़ने पर अन्य सुराग देते हैं, फिर उसे पढ़ाना शुरू करते हैं।	पाठ्य सामग्री पढ़ाने के पहले उसका संदर्भ रचते हैं और सुरागों के सहारे पहले स्वयं से उसे भेदने के मौके देते हैं, उसके बाद ही पढ़ाते हैं।	पाठ्य सामग्री पढ़ाने के पहले उसका परिचय देते हैं।	शिक्षक सीधे पाठ्य सामग्री को पढ़ाना शुरू कर देते हैं।

L3. बच्चों को पुस्तकालय से पुस्तकें ऐक्शन सहित पढ़ कर सुनाते हैं, चर्चा करते हैं, फिर स्वयं पढ़ने का मौका देते हैं।

A	B	C	D
पुस्तकालय को रोज़ कम से कम एक गतिविधि में ज़रूर शामिल करते हैं।	पुस्तकालय से अलग-अलग पुस्तकों को चुन कर सप्ताह में 3 या अधिक बार, ऐक्शन	बच्चों को पुस्तकालय की पुस्तकों को लेकर देखने-पलटने और पढ़ने के नियमित अवसर देते हैं।	पुस्तकालय का उपयोग नहीं करते।

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

	सहित पढ़ कर सुनाते हैं, चर्चा करते हैं, फिर स्वयं पढ़ने का मौका देते हैं।		
L4. बच्चों को चित्र/संकेत बना कर या लिख कर अपनी बात व्यक्त करने के मौके देते हैं।			
A	B	C	D
बच्चों को प्रेरित करते हैं कि वे सोच कर चित्रों और शब्दों/वाक्यों में लिखत अभिव्यक्ति करें। इसके लिये शिक्षक मौके पैदा करते हैं, बच्चों को सहयोग देते हैं, और उनकी रचनाओं को प्रदर्शित करते हैं।	बच्चों को स्वतंत्र चित्र व लेखन पूर्व अभ्यास करने के मौके मिलते हैं। चित्रों, संकेतों, अक्षरों या शब्दों को लिखकर अपनी बात व्यक्त करने के मौके देते हैं।	लेखन का काम पाठों में दिये गये अभ्यासों तक ही सीमित है।	लेखन के नाम पर अधिकतर नकल उतारने का काम होता है।

गणित शिक्षण

गणित में गणितीय अवधारणाओं तक पहुंचने के लिये ठोस वस्तुओं (और बाद में चित्रों, फिर चिह्नों) के साथ विभिन्न क्रियाओं पर जोर है। साथ ही, अपने दैनिक जीवन में गणित देख पाना और सामान्य क्रियाओं से गणितीय अवधारणाओं को जोड़ पाना महत्वपूर्ण है।

M1. स्थानीय पर्यावरण में (ठोस सामग्री/वस्तुओं) का उपयोग गणित की विभिन्न अवधारणाओं को सीखने-सिखाने के दौरान किया जाता है।			
A	B	C	D
शिक्षक ई एल पी एस क्रम का उपयुक्त उपयोग कर अवधारणाओं कि समझ विकसित करते हैं।	शिक्षक बच्चों को ठोस सामग्री/वस्तुओं के साथ विभिन्न क्रियाएँ और गतिविधियाँ कराते हैं।	शिक्षक वस्तुओं और टी एल एम का प्रदर्शन कर के समझाते हैं।	केवल पाठ्यपुस्तक से पढ़ाया जा रहा है।
M2. सीखी गई गणितीय अवधारणाओं और कौशल का शिक्षक द्वारा बच्चों के वास्तविक जीवन की परिचित अवधारणाओं से संबंध जोड़ा जाता है।			
A	B	C	D
सीखी हुई अवधारणाओं को दैनिक जीवन में उपयोग के लिये शिक्षक विशेष कार्य / गतिविधियाँ / प्रोजेक्ट देते हैं।	बच्चों को मौका दिया जाता है कि वे अपने जीवन से उदाहरण और अनुभव साझा करें।	कभी-कभार शिक्षक स्थानीय उदाहरण अपनी ओर से देते हैं।	केवल पाठ्यपुस्तक में दिये गये उदाहरणों से काम लिया जाता है।

परिवेशीय अध्ययन

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

इस विषय में हमारा ज़ोर तथ्यों पर नहीं बल्कि तथ्यों के बीच संबंधों पर है। इंद्रियों के माध्यम से जानकारी हासिल करना (अवलोकन करना) और इसके आधार पर नतीजों तक पहुंचना महत्वपूर्ण है। परिवेश को समझना और उससे अपना संबंध समझ पाना विषय का उद्देश्य है।

E1. अपने इलाके में परिवेश के विभिन्न घटकों/पहलुओं (जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, नदी-तालाब, लोग, आदि) में आपसी संबंधों को समझना।			
A	B	C	D
बच्चे अपने परिवेश के बारे में जानकारी और समझ विभिन्न रूपों में दर्ज करते हैं (लेखन, चित्र, नक्शे, ग्राफ आदि), प्रदर्शित करते हैं और परिवेशीय पहलुओं में आपसी संबंधों पर बात करने के मौके पाते हैं।	शिक्षक परिवेश के विभिन्न घटकों/पहलुओं के बारे में खोजबीन करने और उनके आपसी संबंधों को समझने के मौके रचते हैं।	परिवेशीय जानकारी को शामिल किया जा रहा है, लेकिन उन तथ्यों के बीच संबंधों पर ज़ोर नहीं है।	केवल पाठ्यपुस्तक के पाठों में दिये गये तथ्यों और जानकारी पर ज़ोर है, उसमें दी गयी गतिविधियां नहीं कराई जाती।
E2. कक्षा में बच्चों को अवलोकन के पर्याप्त मौके हैं और वे अवलोकनों का विश्लेषण करते हुए नतीजे तक पहुंचने की कोशिश करते हैं।			
A	B	C	D
बच्चों को अवलोकन के आधार पर अपने द्वारा दर्ज की गई जानकारी का विश्लेषण करने के मौके मिलते हैं।	शिक्षक सुनियोजित तरह से बच्चों को तरह-तरह के अवलोकन करने और उन्हें दर्ज करने के मौके देते हैं।	पढ़ाने के दौरान कभी-कभी शिक्षक कुछ अवलोकन करने के लिये कहते हैं।	कक्षा/स्कूल/घर में स्वयं अवलोकन करने के मौके नहीं दिये जाते।

एआरजी प्रदर्शन मानक और सूचक

एआरजी की भूमिका आगामी सालों में प्रदेश में लागू किए जा रहे समस्त शैक्षिक सुधार के प्रयासों में अपने ब्लाक में परिवर्तनकर्ता (Overall Education Change Leader) के रूप में होगी। इसलिए उसे अपनी भूमिका और दायित्वों के निर्वहन के लिए स्वयं का न्यूनतम प्रदर्शन और योगदान बनाए रखना होगा।

यहां दिए गए मानक और सूचक एआरजी के कार्य और दायित्वों को ध्यान में रखकर विकसित किए गए हैं। ये सूचक 7 श्रेणियों में हैं। नवगठित एआरजी के प्रदर्शन का आकलन नीचे दिए गए मानकों के आधार पर नियमित होता रहेगा। इस मानकों के आधार पर विकसित सूचकों के जरिए वे स्वयं का भी आकलन करते रहेंगे। हर सूचक में चार स्तर हैं- A, B, C और D। D न्यूनतम स्तर है, जबकि C उससे थोड़ा बेहतर। हर सूचक में B वांछित स्तर है और A आदर्श स्तर। हमारा लक्ष्य है हर सूचक में कम से कम B तक पहुंचना।

1. अकादमिक समझ को व्यक्त कर पाते हैं और उसे अभ्यास में बदलते हैं।			
1.1. वांछनीय शिक्षण विधि व अकादमिक समझ को स्वयं कक्षा में क्रियान्वित कर पाते हैं।			
A	B	C	D

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

गतिविधियों को विविध परिस्थितियों के लिये, विशेष तौर पर वंचित बच्चों के लिये शिक्षकों के साथ बना पाते हैं। शिक्षक उसका प्रभावी प्रयोग करते हैं।	गतिविधियों की स्पष्ट समझ है। स्वयं कर पाते हैं और स्कूल विज़िट के दौरान शिक्षक को सहारा दे कर गतिविधि बना पाने में साफल बना पाते हैं।	सामान्य गतिविधियाँ बना पाते हैं लेकिन स्कूल विज़िट के दौरान उसका उपयोग यदा-कदा ही करते हैं।	रचनावादी शिक्षण पद्धति के अनुसार गतिविधियाँ बना नहीं पा रहे हैं अतः शिक्षकों को किसी प्रकार की अकादमिक मदद नहीं दे पा रहे हैं।
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

1.2. भाषा, गणित, परिवेशीय अध्ययन की समझ व इन विषयों के प्रभावी शिक्षण के तरीकों को इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं कि शिक्षकों व समुदाय के बीच उनकी स्वीकार्यता आए।

A	B	C	D
विषयों में रचनावादी शिक्षण पद्धति के अनुसार सीखने-सिखाने के तरीकों को प्रस्तुत कर पा रहे हैं, शिक्षक को दक्ष बना पा रहे हैं और समुदाय उसे स्वीकार रहा है।	विषयों में रचनावादी शिक्षण पद्धति के अनुसार सीखने-सिखाने के तरीकों को प्रस्तुत कर पा रहे और शिक्षक और समुदाय उसे स्वीकारते हैं।	विषयों में रचनावादी शिक्षण पद्धति के अनुसार सीखने-सिखाने के तरीकों को इस प्रकार प्रस्तुत नहीं कर पा रहे कि शिक्षक, और समुदाय के बीच उसकी स्वीकार्यता आए।	विषयों में रचनावादी शिक्षण पद्धति के अनुसार सीखने-सिखाने के तरीकों की बात नहीं करते।

1.3. फाउंडेशनल लर्निंग के लिए निर्धारित करिकुलम, लर्निंग आउटकम और सामग्री के उपयोग में दक्ष हैं व उसे प्रभावी रूप से शिक्षकों तक पहुंचा सकते हैं।

A	B	C	D
स्वयं अपेक्षित तरीकों व स्तर पर कर लेते हैं और शिक्षकों में उस उम्र के बच्चों व फाउंडेशनल लर्निंग की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करने की स्वीकार्यता व क्षमता पैदा करते हैं।	लक्ष्यों, तरीकों, सामग्रियों व व्यवहारों में उस उम्र के बच्चों व फाउंडेशनल लर्निंग की विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप सामंजस्य है। शिक्षक के साथ मिलकर प्लानिंग और उसका प्रयोग भी करते हैं।	उपयुक्त अधिगम बिंदुओं व सामग्री का चयन तो कर लेते हैं लेकिन शिक्षकों के साथ मिलकर विधि के उपयुक्त तरीके उभार नहीं पाते।	प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों की उम्र और फाउंडेशनल लर्निंग की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार विधियों, व्यवहार, सामग्री व अधिगम उद्देश्यों का उचित चयन नहीं कर पाते।

2. समता की समझ, व्यवहार और प्रैक्टिस का प्रदर्शन देते हैं।

2.1. समता की समझ को व्यावहारिक रूप से शिक्षक संदर्भों में प्रदर्शित करते हैं।

A	B	C	D
---	---	---	---

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

अपनी स्थानीय विशिष्ट विविधताओं की समझ है। उस से उभरती कक्षा में विभिन्न पृष्ठभूमि के बच्चों, खासकर वंचित समूहों के बच्चों की आवश्यकताओं को समझते हैं। उसके अनुसार शिक्षक का सहयोग करते और क्षमता उभारते हैं।	अपनी स्थानीय विशिष्ट विविधताओं की समझ है। उस से उभरती कक्षा में विभिन्न पृष्ठभूमि के बच्चों की आवश्यकताओं को समझते हैं और उसके अनुसार शिक्षक का सहयोग करने की कोशिश करते हैं।	अकादमिक सहयोगी की तरह जाते हैं। सामान्य व्यवहार में सबका न्यूनतम सम्मान करते हैं लेकिन अकादमिक प्रक्रियाओं में विविधता से उभरती आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते।	स्कूलों में निरीक्षक की तरह जाते हैं। कमियाँ निकालते हैं तथा नकारात्मक टिप्पणियों द्वारा शिक्षकों को हतोत्साहित करते हैं।
2.2. समुदाय और माता-पिता की भागीदारी को मूल्य देते हुए शिक्षकों को उसे सुनिश्चित करने के लिये तैयार करते हैं।			
A	B	C	D
शिक्षकों के साथ समुदाय, माता-पिता और एस एम सी को उन के ज्ञान के भंडार के आधार पर उनसे शैक्षिक साझेदारी करते हैं। शिक्षकों को भी इसमें सक्षम बनाते हैं।	शिक्षकों के साथ समुदाय और माता-पिता की साझेदारी के तरीके अपनाते हैं। एस एम सी के साथ स्कूल के विकास के निर्णय लेने में शिक्षकों/ स्कूल को सपोर्ट करते हैं।	बच्चों का सीखना सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों के साथ समुदाय व माता-पिता का सहयोग लेने के तरीकों पर चर्चा करते हैं।	समुदाय व माता-पिता के बारे में नकारात्मक टिप्पणी करते हैं अतः उनकी भागीदारी के लिये कोई विशेष प्रयास नहीं करते।
3. कुशल शिक्षक और प्रशिक्षक के रूप में प्रभावशाली कार्य करते हैं।			
3.1. प्रशिक्षण व संप्रेषण के तरीकों का कुशलता से प्रयोग करते हैं।			
A	B	C	D
विविध प्रकार की व्यावहारिक गतिविधियों और उदाहरणों के जरिए रोचकता और जिज्ञासा पैदा कर, विविध तरीकों का विभिन्न परिस्थितियों में प्रभावशाली उपयोग कर दूसरों को कुशल बना पाते हैं।	सामान्य प्रशिक्षणों में उपयुक्त समझ को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत कर पाते हैं ताकि दूसरे भी समझ विकसित कर पायें।	अपनी कक्षा में कर पाने की वजह से शैक्षणिक समझ तो स्पष्ट है लेकिन दूसरों तक पहुंचाने के तरीके कमजोर हैं।	शिक्षण पद्धतियों के बारे में सैद्धांतिक समझ व्यक्त करते हैं और अपनी कक्षा में कुछ गतिविधियां भी करा पाते हैं।
3.2. आवश्यकताओं व संदर्भ के अनुसार प्रशिक्षण का विकास कर पाते हैं, उसका क्रियान्वयन कर प्रभावशालिता का आंकलन कर पाते हैं।			
A	B	C	D

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

डिज़ाइन के व्यावहारिक तरीके एवं गतिविधियाँ जिज्ञासा पैदा कर विभिन्न परिस्थितियों में लागू करने की कुशलता विकसित करते हैं। फीडबैक के आधार पर डिज़ाइन में बदलाव किया जाता है।	डिज़ाइन के व्यावहारिक तरीके एवं गतिविधियाँ दूसरों की समझ विकसित करने में प्रभावशाली हैं। फीडबैक के आधार पर डिज़ाइन में बदलाव करने की पहल की जाती है।	प्रशिक्षण डिज़ाइन व्यावहारिक समझ व संदर्भ पर आधारित है लेकिन दूसरों तक पहुँचाने के तरीके कमज़ोर हैं।	प्रशिक्षण डिज़ाइन का आधार सैद्धांतिक अधिक और व्यावहारिक कम है, तरीके सीमित हैं।
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------

4. सपोर्टिव मेंटर के रूप में शिक्षक का समर्थन करते हैं।

4.1. अलग-अलग स्तरों पर हो रही शैक्षिक प्रक्रियाओं पर शिक्षकों से गहराई में जानकारी ले पाते हैं तथा सकारात्मक फीडबैक दे पाते हैं।

A	B	C	D
पूर्ण रूप से सहयोगी की भूमिका में हैं। विभिन्न सवाल के ज़रिए शिक्षकों को धैर्यपूर्वक सुनते हैं। उनसे फीडबैक ले कर योजनाबद्ध ढंग से अकादमिक सपोर्ट प्रदान कर रहे हैं।	शिक्षकों को धैर्यपूर्वक सुनते हैं। उनसे राय माँगते हैं। उनकी राय पर मिलकर योजना बनाते हैं और स्कूल सुधार के लिए काम करते हैं।	स्वयं को एक अकादमिक सहयोगी के रूप में जानते हैं। स्कूलों में शैक्षिक सुधार के लिए सलाह देते हैं पर विद्यालय स्तर पर यह कार्य करने हेतु उनके पास कोई निश्चित योजना नहीं है।	निरीक्षक की भाँति अपना कार्य कर रहे हैं। स्कूल विज़िट के दौरान ऐडमिन रिलेटेड पूछताछ करते हैं। अपने आप को शिक्षकों से उच्च दिखाते हैं।

4.2. हो रही प्रक्रियाओं व नवाचारों की प्रगति का रिकार्ड रख पाते हैं, उन पर जानकारी का आदान-प्रदान व विश्लेषण करते हैं, व विश्लेषण अनुसार इनपुट दे पाते हैं।

A	B	C	D
प्रक्रियाओं और नवाचारों के आदान प्रदान हेतु सुविचारित प्लानिंग करते हैं। उसका उपयोग निर्धारित समयांतराल पर नियमित रूप से करते हैं। उसका प्रॉपर डॉक्युमेंट कर विभाग और बाहर नियमित रूप से किया जाता है।	प्रक्रियाओं और नवाचारों के आदान प्रदान हेतु बैठकों/सोशल मीडिया के ज़रिए एक दूसरे की सफलताओं को साझा करते हैं और अपनाते हैं। इनका रेकॉर्ड रखा जाता है तथा विभाग और बाहर साझा करने की पहल की जाती है।	शिक्षकों से हो रही प्रक्रियाओं व नवाचारों के आदान प्रदान हेतु प्लानिंग की समझ रखते हैं तथा उसके करियॉवन हेतु संकुल प्रभारियों एवं शिक्षकों के साथ प्रयास करते हैं।	शिक्षकों से हो रही प्रक्रियाओं व नवाचारों के आदान प्रदान का कोई अवसर या प्लानिंग नहीं है। शिक्षकों या NPRC से केवल सूचनाओं का आदान-प्रदान ही करते हैं।

5. सहयोगात्मक नेतृत्व और समन्वयन कौशल के आधार पर लक्ष्य हासिल करने में सबको जोड़ते हैं।

5.1. सहयोगात्मक रूप से सभी शिक्षकों को जोड़ कर उनकी सहभागिता सुनिश्चित कर पाते हैं

A	B	C	D
---	---	---	---

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

सभी शिक्षकों के नाम, उनकी योग्यता, अकादमिक अभिरूचियाँ तथा विशेषज्ञता व कमियों के क्षेत्रों से परिचित हैं। उनकी कमियाँ सुधारने में मदद करते हैं तथा खूबियों का संकुल में प्लानिंग के साथ उपयोग करते हैं।	सभी शिक्षकों से भली भाँति परिचित हैं तथा उनकी अकादमिक आवश्यकताओं को पहचानकर कमियाँ सुधारने में मदद देते हैं। शिक्षकों से आत्मीय व्यवहार करते हैं।	शिक्षकों के बारे में आवश्यक जानकारी यथा नाम, निवास, अकादमिक अनुभव, रुचि के क्षेत्र आदि की जानकारी रखते हैं। उनकी ज़रूरतों और आवश्यकता के क्षेत्रों पर सामान्य समझ रखते हैं।	शिक्षकों के बारे में केवल सामान्य जानकारी यथा नाम, निवास आदि ही रखते हैं। उनकी ज़रूरतों और आवश्यकता के क्षेत्रों की समझ नहीं है।
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

6. डाटा का उपयोग करके निर्णय और प्रमाण आधारित एक्शन लेते हैं।

6.1. छात्रों के सीखने के डेटा के विश्लेषण के आधार पर कक्षा, स्कूल, ब्लाक व जनपद स्तर पर लिये जाने वाले कदमों की पहचान कर सकते हैं।

A	B	C	D
बच्चों के आंकलन के data को विश्लेषित कर पाते हैं कि किन focal outcome में अधिकांश बच्चे पिछड़ रहे हैं। उसके अनुरूप विविध परिस्थितियों के लिए, खासकर वंचित बच्चों के लिए व्यावहारिक इनपुट दे पाते हैं और शिक्षकों में यह क्षमता विकसित करते हैं।	बच्चों के आंकलन के data को विश्लेषित कर पाते हैं कि किन focal outcome में अधिकांश बच्चे पिछड़ रहे हैं और उसके अनुरूप शिक्षकों को व्यावहारिक इनपुट दे पाते हैं। शिक्षकों में यह क्षमता विकसित करने की पहल करते हैं।	बच्चों के आंकलन का data देखकर अधिकांश बच्चे किन focal outcomes पर अच्छा नहीं कर पा रहे की पहचान है लेकिन उसके अनुरूप व्यावहारिक इनपुट नहीं दे पाते।	कभी-कभार बच्चों के आंकलन का data देखते हैं परंतु उसका विश्लेषण नहीं करते, न ही उसका कोई उपयोग किया जाता है।

6.2 शिक्षकों के प्रदर्शन डेटा के विश्लेषण के आधार पर कक्षा, स्कूल, ब्लाक व जनपद स्तर पर लिये जाने वाले कदमों की पहचान कर सकते हैं।

A	B	C	D
संकलित और विश्लेषित data के आधार पर विविध स्तर के लिए शिक्षकों के साथ सुधार योजना बनाते हैं, लागू करते हैं। उसका नियमित फॉलो-अप भी करते हैं।	प्रदर्शन मानक data का संकलन करते हैं। विश्लेषण का प्रयास भी करते हैं। शिक्षकों के साथ योजना बना कर लागू करने की कोशिश करते हैं।	प्रदर्शन मानक data का कुछ ही स्कूलों या क्षेत्र से संकलन करते हैं। उसका विश्लेषण नहीं किया जाता।	शिक्षक स्तर के प्रदर्शन मानक का data संकलन नहीं करते।

7. एआरजी सदस्य के रूप में सतत स्वविकास करते रहते हैं।

7.1 एआरजी सदस्य के रूप में स्वयं के विकास को ले कर सजग हैं और सतत कदम उठाते रहते हैं।

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

A	B	C	D
अपने सीखने के लक्ष्य और समयबद्ध योजना बनाते हैं। इसके लिए विविध स्रोतों से अपना सीखते रहना सुनिश्चित करते हैं और दूसरों को भी प्रोत्साहित करते हैं।	अपने सीखने के लक्ष्य और समयबद्ध योजना बनाते हैं और उनके आधार पर विविध स्रोतों से सीखते रहने का प्रयास करते हैं।	ARP की भूमिका, दायित्व और कार्यों को पूर्ण करने हेतु प्रयास करते हैं किंतु अपने सीखने के लक्ष्य और योजना नहीं बनाते।	ARP की भूमिका, दायित्व और कार्यों की कुछ समझ है लेकिन उन्हें पूर्ण करने हेतु समयबद्ध योजना बनाने का प्रयास नहीं करते।

एसआरजी प्रदर्शन मानक और सूचक

एसआरजी की भूमिका आगामी सालों में प्रदेश में लागू किए जा रहे समस्त शैक्षिक सुधार के प्रयासों में अपने जनपद में परिवर्तनकर्ता (Overall Education Change Leader) के रूप में होगी। इसलिए उसे अपनी भूमिका और दायित्वों के निर्वहन के लिए स्वयं का न्यूनतम प्रदर्शन और योगदान बनाए रखना होगा।

यहां दिए गए मानक और सूचक एसआरजी के कार्य और दायित्वों को ध्यान में रखकर विकसित किए गए हैं। ये सूचक 7 श्रेणियों में हैं। नवगठित एसआरजी के प्रदर्शन का आकलन नीचे दिए गए मानकों के आधार पर नियमित होता रहेगा। इस मानकों के आधार पर विकसित सूचकों के जरिए वे स्वयं का भी आकलन करते रहेंगे। हर सूचक में चार स्तर हैं- A, B, C और D। D न्यूनतम स्तर है, जबकि C उससे थोड़ा बेहतर। हर सूचक में B वांछित स्तर है और A आदर्श स्तर। हमारा लक्ष्य है हर सूचक में कम से कम B तक पहुंचना।

इसलिए उसे अपनी भूमिका और दायित्वों के निर्वहन के लिए स्वयं का न्यूनतम प्रदर्शन और योगदान बनाए रखना होगा। नवगठित एसआरजी के प्रदर्शन का आकलन नीचे दिए गए मानकों के आधार पर नियमित होता रहेगा। इस मानकों के आधार पर विकसित सूचकों के जरिए वे स्वयं का भी आकलन करते रहेंगे।

1. अकादमिक समझ को व्यक्त कर पाते हैं और उसे अभ्यास में बदलते हैं।			
1.1 वांछनीय शिक्षण विधि व अकादमिक समझ को स्वयं कक्षा में क्रियान्वित कर पाते हैं।			
A	B	C	D
विविध परिस्थितियों के लिये, विशेष तौर पर वंचित बच्चों के लिये, तरह-तरह के नवाचार करते हैं ताकि सभी सीख सकें।	स्वयं कर पाते हैं, अन्य परिस्थितियों के लिये अपना पाते हैं, दूसरों को इस प्रकार समझा पाते हैं के वे उसे अपनाने के लिये राजी हो जायें।	अपनी कक्षा में कर पाते हैं लेकिन अन्य परिवेशों व परिस्थितियों के लिये अपना नहीं पाते।	रचनावादी शिक्षण पद्धति के अनुसार गतिविधियां बना नहीं पा रहे हैं या पूरी तरह कक्षा में उतार नहीं पा रहे हैं।
1.2. भाषा, गणित, परिवेशीय अध्ययन की समझ व इन विषयों के प्रभावी शिक्षण के तरीकों को इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं कि शिक्षकों, एसआरजी व समुदाय के बीच उनकी स्वीकार्यता आए।			
A	B	C	D
विषयों में रचनावादी शिक्षण पद्धति के अनुसार सीखने-सिखाने	विषयों में रचनावादी शिक्षण पद्धति के अनुसार सीखने-सिखाने	विषयों में रचनावादी शिक्षण पद्धति के अनुसार सीखने-सिखाने	विषयों में रचनावादी शिक्षण पद्धति के अनुसार सीखने-सिखाने

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

के तरीकों को प्रस्तुत कर पा रहे हैं, शिक्षक और एआरजी को दक्ष बना पा रहे हैं और समुदाय उसे स्वीकार रहा है।	के तरीकों को प्रस्तुत कर पा रहे और शिक्षक, एआरजी और समुदाय उसे स्वीकारते हैं।	के तरीकों को इस प्रकार प्रस्तुत नहीं कर पा रहे कि शिक्षक, एआरजी और समुदाय के बीच उसकी स्वीकार्यता आए।	के तरीकों की बात नहीं करते।
1.3. फाउंडेशनल लर्निंग के लिए निर्धारित करिकुलम, लर्निंग आउटकम और सामग्री के उपयोग में दक्ष हैं व उसे प्रभावी रूप से दूसरों तक पहुंचा सकते हैं।			
A	B	C	D
स्वयं तो अपेक्षित तरीकों व स्तर पर कर ही लेते हैं बल्कि दूसरों में स्वीकार्यता पैदा कर उनमें उस उम्र के बच्चों व फाउंडेशनल लर्निंग की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करने की स्वीकार्यता व क्षमता पैदा करते हैं।	लक्ष्यों, तरीकों, सामग्रियों व व्यवहारों में उस उम्र के बच्चों व फाउंडेशनल लर्निंग की विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप सामंजस्य है।	उपयुक्त अधिगम बिंदुओं व सामग्री का चयन तो कर लेते हैं लेकिन विधि को उपयुक्त तरीकों से उपयोग में नहीं ला पाते।	प्रारंभिक कक्षाओं में जिन विधियों, व्यवहार, सामग्री व अधिगम उद्देश्यों का चयन करते हैं, वे उस उम्र के बच्चों व फाउंडेशनल लर्निंग की विशेष आवश्यकताओं से मेल नहीं रखती हैं।
2. समता की समझ, व्यवहार और प्रैक्टिस का प्रदर्शन देते हैं।			
2.1. समता की समझ को व्यवहारिक रूप से शैक्षक संदर्भों में प्रदर्शित करते हैं।			
A	B	C	D
समता और बराबरी के सम्बंध को समझते और लागू करते हैं और उसे दूसरों को समझा पाते हैं।	अपनी स्थानीय विशिष्ट विविधताओं को समझते हैं, उनका सम्मान करते और उसे अपनी कार्य योजना और व्यवहार में सम्मिलित करते हैं।	सामान्य व्यवहार में सबका न्यूनतम सम्मान करते हैं लेकिन अकादमिक प्रक्रियाओं में विविधता से उभरती आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते।	स्वयं ही भेद-भाव से ग्रसित (मानते हैं की कुछ समूहों के बच्चे या शिक्षक या समुदाय सुधर नहीं सकते)
2.2. समुदाय और माता-पिता की भागीदारी को मूल्य देते हुए शिक्षकों व ए आर जी को उसे सुनिश्चित करने के लिये तैयार करते हैं।			
A	B	C	D
उनके कार्य में झलकता है कि वे समुदाय को अधिकार-धारक व अपने आप के दायित्व-धारक मानते हैं, तथा समुदाय के ज्ञान के भंडार के	कोशिश करते हैं कि स्कूल व शिक्षक कदम उठाएँ ताकि बच्चों के हित में समुदाय व माता-पिता के साथ साझेदारी हो, व स्कूल के विकास के निर्णय एस एम सी के	कोशिश करते हैं कि समुदाय व माता-पिता स्कूल व शिक्षकों के सहायता करने के लिये कदम उठाएँ, व एस एम सी स्कूल को सहयोग दे।	समुदाय व माता-पिता की भागीदारी के लिये कोई विशेष प्रयास नहीं करते।

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

आधार पर उनसे शैक्षिक साझेदारी करते हैं।	साथ मिल कर लिये जायें।		
3. कुशल शिक्षक और प्रशिक्षक के रूप में प्रभावशाली कार्य करते हैं।			
3.1. प्रशिक्षण व संप्रेषण के तरीकों का कुशलता से प्रयोग करते हैं।			
A	B	C	D
जिज्ञासा पैदा कर विविध तरीकों का विभिन्न परिस्थितियों में प्रभावशाली उपयोग कर दूसरों को कुशल बना पाते हैं।	सामान्य प्रशिक्षणों में उपयुक्त समझ को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत कर पाते हैं ताकि दूसरे भी समझ विकसित कर पायें।	अपनी कक्षा में कर पाने की वजह से शैक्षणिक समझ तो स्पष्ट है लेकिन दूसरों तक पहुंचाने के तरीके कमजोर हैं।	समझ सैद्धांतिक अधिक और व्यावहारिक कम है, व तरीके सीमित हैं।
3.2. आवश्यकताओं व संदर्भ के अनुसार प्रशिक्षण का विकास कर पाते हैं, उसका क्रियान्वयन कर प्रभावशालिता का आंकलन कर पाते हैं।			
A	B	C	D
डिज़ाइन के व्यावहारिक तरीके एवं गतिविधियाँ जिज्ञासा पैदा कर विभिन्न परिस्थितियों में लागू करने की कुशलता विकसित करते हैं। फीडबैक के आधार पर डिज़ाइन में बदलाव किया जाता है।	डिज़ाइन के व्यावहारिक तरीके एवं गतिविधियाँ दूसरों की समझ विकसित करने में प्रभावशाली हैं। फीडबैक के आधार पर डिज़ाइन में बदलाव करने की पहल की जाती है।	प्रशिक्षण डिज़ाइन व्यावहारिक समझ व संदर्भ पर आधारित है लेकिन दूसरों तक पहुँचाने के तरीके कमजोर हैं।	प्रशिक्षण डिज़ाइन का आधार सैद्धांतिक अधिक और व्यावहारिक कम है, तरीके सीमित हैं।
4. सपोर्टिव मेंटर के रूप में एआरजी का समर्थन करते हैं।			
4.1. अलग-अलग स्तरों पर हो रही शैक्षिक प्रक्रियाओं पर दूसरों से गहराई में जानकारी ले पाते हैं तथा सकारात्मक फीडबैक दे पाते हैं।			
A	B	C	D
ARP और शिक्षकों को विभिन्न सवालों के ज़रिए अपने अनुभव साझा करने का समय देते हैं। उनके अनुभवों के मुख्य बिंदु स्पष्ट करते हैं, उदाहरण सहित फीडबैक देते हैं और उनमें यह कुशलता विकसित करते हैं।	ARP और शिक्षकों को धैर्यपूर्वक सुनते हैं, सवालों के लिए प्रोत्साहित करते हैं और उदाहरण सहित फीडबैक दे पाते हैं जिसे वे स्वीकार करते हैं।	ARP और शिक्षकों से उनके काम के बारे में पूछताछ करते हैं। अपनी ओर से सुझाव और कार्य देते हैं।	ARP या शिक्षकों से मिल कर उन्हें निर्देश देते हैं। उनके बारे में निराशापूर्ण टिप्पणियाँ करते हैं।

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

4.2. हो रही प्रक्रियाओं व नवाचारों की प्रगति का रिकार्ड रख पाते हैं, उन पर जानकारी का आदान-प्रदान व विश्लेषण करते हैं, व विश्लेषण अनुसार इनपुट दे पाते हैं।

A	B	C	D
शिक्षक और ARP प्रदर्शन data के आधार पर उचित निष्कर्ष निकाल, विविध परिस्थितियों के लिए इनपुट प्लान कर योजना बना लेते हैं। यही कुशलता ARP में विकसित करते हैं। शैक्षिक नवाचारों को विभाग और बाहर साझा करते हैं।	शिक्षक और ARP प्रदर्शन data के आधार पर विश्लेषण एवं शैक्षिक सुधार की योजना बनाने और लागू करने की कोशिश करते हैं। ARP के साथ शैक्षिक नवाचारों को विभाग और बाहर साझा करने की पहल करते हैं।	जिले में हो रही शैक्षिक प्रक्रियाओं व नवाचारों की कुछ समझ रखते हैं। ब्लॉक, संकुल व स्कूलों में क्या अच्छा है जैसी समझ है। इस जानकारी के अनुसार इनपुट दे पाते हैं।	जिले में हो रही शैक्षिक प्रक्रियाओं व नवाचारों के बारे में सामान्य जानकारी है। शैक्षिक सुधार के कार्यक्रमों के बारे में उदासीन हैं।

5. सहयोगात्मक नेतृत्व और समन्वयन कौशल के आधार पर लक्ष्य हासिल करने में सबको जोड़ते हैं।

5.1. सहयोगात्मक रूप से सभी को जोड़ कर उनकी सहभागिता सुनिश्चित कर पाते हैं।

A	B	C	D
हर स्तर पर बराबरी के सम्बंध हैं। ARP तथा शिक्षकों से शैक्षिक गुणवत्ता समवर्धन की दृष्टि से सबकी सहभागिता सुनिश्चित करते हैं और स्वयं भी सहयोग करते हैं।	सभी से एक समान व्यवहार करते हैं। ARP तथा शिक्षकों से शैक्षिक गुणवत्ता समवर्धन की दृष्टि से सबकी सहभागिता का प्रयास करते हैं और स्वयं भी सहयोग करते हैं।	कुछ परिचित ARP और शिक्षकों से अधिक सहभागिता की अपेक्षा करते हैं। सभी शिक्षकों और ARP तक पहुँच नहीं है। इनसे सूचनाओं और कार्यक्रमों के लिए सहभागिता लेते हैं।	सम्बंध बनाने में सक्षम हैं। कुछ ARP और कुछ शिक्षकों से अच्छे सम्बंध हैं पर वे हालचाल तक सीमित हैं।

6. डाटा का उपयोग करके निर्णय और प्रमाण आधारित एक्शन लेते हैं।

6.1. छात्रों के सीखने के डेटा के विश्लेषण के आधार पर कक्षा, स्कूल, ब्लॉक व जनपद स्तर पर लिये जाने वाले कदमों की पहचान कर सकते हैं।

A	B	C	D
बच्चों के आंकलन के data को विश्लेषित कर पाते हैं कि किन focal outcome में अधिकांश बच्चे पिछड़ रहे हैं। उसके अनुरूप विविध परिस्थितियों के लिए, खासकर वंचित बच्चों के	बच्चों के आंकलन के data को विश्लेषित कर पाते हैं कि किन focal outcome में अधिकांश बच्चे पिछड़ रहे हैं और उसके अनुरूप ARP को व्यावहारिक इनपुट दे पाते हैं। ARP में यह	बच्चों के आंकलन का data देखकर अधिकांश बच्चे किन focal outcomes पर अच्छा नहीं कर पा रहे की पहचान है लेकिन उसके अनुरूप व्यावहारिक इनपुट नहीं दे पाते।	कभी-कभार बच्चों के आंकलन का data देखते हैं परंतु उसका विश्लेषण नहीं करते, न ही उसका कोई उपयोग किया जाता है।

UP TELOS – Teacher Performance Standard and Indicators

लिए व्यावहारिक इनपुट दे पाते हैं और ARP में यह क्षमता विकसित करते हैं।	क्षमता विकसित करने की कोशिश करते हैं।		
6.2. शिक्षकों व ए आर जी के प्रदर्शन डेटा के विश्लेषण के आधार पर कक्षा, स्कूल, ब्लॉक व जनपद स्तर पर लिये जाने वाले कदमों की पहचान कर सकते हैं।			
A	B	C	D
संकलित और विश्लेषित data के आधार पर विविध स्तर के लिए ARP के साथ सुधार योजना बनाते हैं, लागू करते हैं। उसका नियमित फॉलो-अप भी करते हैं।	प्रदर्शन मानक data का संकलन करते हैं। विश्लेषण का प्रयास भी करते हैं। ARP के साथ योजना बना कर लागू करने की कोशिश करते हैं।	प्रदर्शन मानक data का कुछ ही स्कूलों या क्षेत्र से संकलन करते हैं। उसका विश्लेषण नहीं किया जाता।	शिक्षक व ARP स्तर के प्रदर्शन मानक का data संकलन नहीं करते।
7. एस आर जी सदस्य के रूप में सतत स्वविकास करते रहते हैं।			
7.1. एस आर जी सदस्य के रूप में स्वयं के विकास को ले कर सजग हैं और सतत कदम उठाते रहते हैं।			
A	B	C	D
अपने सीखने के लक्ष्य और समयबद्ध योजना बनाते हैं। इसके लिए विविध स्रोतों से अपना सीखते रहना सुनिश्चित करते हैं और दूसरों को भी प्रोत्साहित करते हैं।	अपने सीखने के लक्ष्य और समयबद्ध योजना बनाते हैं और उनके आधार पर विविध स्रोतों से सीखते रहने का प्रयास करते हैं।	SRG की भूमिका, दायित्व और कार्यों को पूर्ण करने हेतु प्रयास करते हैं किंतु अपने सीखने के लक्ष्य और योजना नहीं बनाते।	SRG की भूमिका, दायित्व और कार्यों की कुछ समझ है लेकिन उन्हें पूर्ण करने हेतु समयबद्ध योजना बनाने का प्रयास नहीं करते।